International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 2.120 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 2, Issue 2, March 2015 |

पौराणिक साहित्य में नारी चिंतन

डॉ. संजू गर्ग

व्याख्याता, संस्कृत, राजकीय महाविद्यालय, बहरोड़, जिला-अलवर

सार: नारी को नर के समान धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि अधिकार प्राप्त थे । नारी के बिना नर को यज्ञ न करने की भावना के पीछे भी नारी सम्मान की भावना ही तत्कालीन पुरुष के हृदय में अन्तर्निहित थी; नारी को समस्त अधिकार प्रदान करने वाला समाज व पुरुष वर्ग निःसन्देह स्त्रीवर्ग के लिए श्रद्धा एवं आदर का भाव रखता था ।

I. परिचय

समाज के दो सिद्धांत स्त्री-पुरुष एक दूसरे से संतुष्ट हैं। किसी एक के अभाव में दूसरे का अनुभव नहीं होता। उसके बाद भी पुरुष समाज ने महिला समाज को अपने समकक्ष के अनुकूल से वोट दिया। यही पूर्वी दृष्टि ने शिक्षित नारियों को आंदोलन करने के लिए मजबूर किया जो आज अवशेष नदी - दृष्टिगोचर के रूप में चर्चा है।

आदिकाल से ही नारियों की दशा एवं सोचनीय थी। राक्षस की दशा को देखने के बाद कहा गया है कि जगत के कल्याण के बिना जगत के कल्याण की कोई संभावना नहीं है। पक्षी के लिए एक पंख से उड़ना संभव नहीं है। अछूता जी महिला समाज की वास्तविक दशा से चिंचित , देश एवं समाज के हित महिला समाज के अवशेषों के विनाश के बारे में बताया गया है।

सृष्टि की सुन्दर रचना में स्त्री का सर्वोत्तम स्थान है। भारतीय जन जीवन में या यूँ कहें कि प्राचीन सभ्यताओं में स्त्री रूप में ही ईश्वर की कल्पना की गई है। वैदिक अध्ययन से पता चलता है कि भारतीयों को सभी आदर्श स्त्री रूप में मिलते हैं। विद्या का आदर्श सरस्वती, धन की लक्ष्मी, शक्ति की दुर्गा, सौंदर्य की रति, पवित्रता में गंगा तथा जगतजननी के नाम से स्त्री को बुलाया गया हैI

स्त्री विमर्श का अर्थ है ईसाई धर्म, संप्रदाय, संस्कृति, परंपरा एवं समाज के अंतर्गत हमारी दृष्टि धारण की जाती है। स्त्री की स्थिति पर विचार, विचार एवं मनन करना हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श की शुरुआतवाद छाया काल से मानी जाती है। महादेवी वर्मा की माँ वेदना का विभिन्न रूप में दर्शन। उनकी श्रृंखला 'कड़िया' स्त्री-संविधान का सुंदर उदाहरण है। जिसमें नारी-जागरण एवं मुक्ति का प्रश्न उठाया गया है। ऐसा साहित्य जिसमें स्त्री जीवन की अनेक संभावनाओं का चित्रण हो स्त्री-विमर्श व्याख्याता है।[1,2]

पुराने इतिहास की औरतें रह रही हैं, नस्ल ही उनकी दासता और शोषण का भी है। स्त्री अपने त्रासद जीवन से मुक्ति के लिए प्रयास कर रही है। सबसे पहले (भारतीय सन्दर्भ) हम वेदों की बात करते हैं तो स्त्री अपने साइबेरियाई रूप में सामने आती है। ऐतिहासिक दृष्टि से वैदिककाल स्त्री जहां स्त्री पुरुष के समान जीवन शैली का प्रयोग करती थी। शिक्षा हो, गृहस्थ जीवन हो, काला युद्ध कला या धार्मिक क्षेत्र हो, सभी जगह स्त्री को समान अधिकार प्राप्त थे। बाल-विवाह, परदा-प्रथा और सती-प्रथा पर प्रतिबंध माना गया था। पुनर्विवाह वोग में था। स्त्री पहचान का जाग्रत उदाहरण ऋग्वेद के एक सौ छब्बीसवें सूक्त के उपदेश मंत्र से स्पष्ट दिखाई देता है। उदाहरण के तौर पर 'रोमेश' के पति ने कहा, "हे राजन! जैसे पृथ्वी राज्य धारण एवं रक्षा करनेवाली है, वैसे ही मैं प्रशंसित रोमोंवाली हूं। मेरे सभी दस्तावेज़ों को डिज़ाइन करें। मेरे सामान को सामने अपना छोटा न माने।" वह अपनी रचना को पहचानती है। उसे अपनी संपत्ति का ज्ञान है। युद्ध क्षेत्र में विजयी 'मुद्गलपत्नी' एवं 'विषपला' विरांगना रूप में अपनी अस्मिता दर्ज कराती हैं। 'ममता; 'अदिति; 'विश्वारा; 'आत्रेयी; 'शाश्वती; 'अपाला; 'शिखंडिनी; 'घोषा; 'उर्वशी; 'इंद्राणी अन्य की उपस्थिति सूक्त दृष्टव्य के रूप में है। वेदों की बारह-पंद्रह ऋचाओं की दृष्टा स्त्री रही है। इसे स्त्री लेखन का शैक्षिक प्रयास कहा जा सकता है।

वेदों के बाद संभावित 'थेरी लीजेंड' स्त्री लेखन के दृश्य से महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। जिसे 'सुमन राजे' प्रथम भारतीय नवजागरण की संस्थाएं हैं। बौद्ध धर्म के अंतर्गत 'थेरी लीजेंड्स' के 'सुत्तपिटक' के 'खुद्दक ऑर्बडीट' के '522' ग्रंथों का संकलन है। जिसमें '73' थेरीओन (बौद्ध धर्म में दीक्षित ऋषिकाएं) के उद्गार सेल स्कूटर में विभक्त हैं। ये गाथाएं स्त्री पीड़ा की गहनता से उभरने के लिए 'निर्वाण' का मार्ग दर्शाती हैं। "वहाँ पौराणिक कथाओं में भिक्षुओं के प्रवज्या ग्रहण करने के कोई विशेष कारण नहीं दिए गए हैं।" कुछ अपवादों को छोड़ दें तो बुद्ध वचनों से प्रेरित होकर ही वे इस मार्ग के पथिक बनें। लेकिन थेरियो के संबंध में यह सच नहीं है। यहां कारण और ठोस भौतिक कारण और शत प्रतिशत स्त्रीत्व से संबंधित है।" दरिद्र ब्राह्मण की कन्या 'मुक्ता' निर्वाण ग्रहण करने पर, अपनी मुक्ति की अभिव्यक्ति कुछ इस प्रकार करती है-

"मैं सुमुक्त हो गया! अच्छा विमुक्त हो गया!
तीन टेढ़ी नीम से मैं भली विमुक्त हो गई।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 2.120 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 2, Issue 2, March 2015 |

ओखली से, मसल से, और अपने कुंबले स्वामी से,
मैं अच्छी तरह मुक्त हो गया।"
इसी तरह थेरी 'समंगल माता' पुरुषसत्ता से मुक्ति और अपनी स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति कुछ इस प्रकार करती है-
"अहो! मैं मुक्त नारी, मेरी मुक्ति धन्य है।
पहले मैं मूसल लेकर धान सुखाता था।
आज वो आज़ाद हुई।
'आम्रपाली' (थेरी) की जीवन कहानी स्त्री संवाद की दृष्टि से अनोखा उदाहरण है। 'आम्रपाली' अत्यंत सुंदर होने के कारण सभी ने अपना जीवन बना लिया, जो गणिका का जीवन जीने को मजबूर हो गया। पौराणिक कथाओं में सौंदर्य का ऐसा वर्णन किया गया है जो अन्यत्र कहीं नहीं है। अच्छा ही है हमारे यहां साहित्य का पूरा एक कालखंड स्त्री सौंदर्य चित्रण और नख-शिख से भरा हो। 'आम्रपाली' का कहना है-

"काले बालों के रंग के समान जहां अभागा घुंघराले हैं,
ऐसे किसी समय मेरे बाल थे।
आज वो जरावस्था में सन के छात्र जैसे हो गए हैं।
चित्रकार के हाथ से नॉटआउट अंकित की हुई जैसी
मेरे दोनों बर्नहिं थे।
आज वही जरावस्था में झुरियां पढ़कर नीचे लटकी हुई हैं।"

मीराबाई के सन्दर्भ में 'सुमन राजे' लिखती हैं कि, "मध्ययुगीन साहित्य में मीरा का जीवन और साहित्य-विद्रोह का आकर्षण है।" मीराबाई की 'गीत गोविंद टीका', 'नरसीजी का मायरा', 'राग सोरठा', 'सत्यभामा नु रूसन' और 'मीरा की गरीबी' आदि ग्रंथों के बारे में बताया गया है। कारण, एक तो स्त्री लेखन दूसरा होना, इतिहासकारों का स्त्री उपेक्षित दृष्टिकोण। अंतिम समय में मीराबाई रणछोड़ जी के मंदिर में नृत्य करती हुई विलीन हो गईं। हमारे पितृसत्तात्मक समाज में कोई आश्चर्य की बात नहीं है। स्त्री इसी तरह के धार्मिक दुशाले में बाली कहलाती रहती है। ऐसे समय में स्त्री लेखन को सुरक्षित एवं संरक्षण देने का प्रश्न ही नहीं है।[2,3]

जिस समाज में स्त्री को मौन रहकर शिक्षा दी जाए, वहां स्त्री की अपनी इच्छा से नवीनतम स्वर में अभिव्यक्त करना 'अब कोए कुछ कहो दिल लगारे, जकी प्रीत लालन से, कंचन मिला सुहागा रे' स्वाधीनता स्वयं का परिचय है1

आधुनिक युग के आरंभकर्ता के रूप में भारतेंदु का नाम अग्रणी है, तो आधुनिक काल के स्त्री लेखन की दृष्टि से विश्व प्रसिद्ध मल्लिका जी को स्वीकार किया जा सकता है। अन्य 'कुमुदिनी', 'कुलीनकन्या' (चंद्रप्रभा/पूर्ण प्रकाश) और 'पारस्य' तीन उपन्यासों की रचनाएँ हैं। कुमुदिनी के सन्दर्भ में नीरजा माधव कहती हैं कि, "मल्लिका जी का उपन्यास 'कुमुदिनी' बंकिम जी का उपन्यास कृष्णकांत का वसीयतनामा से बहुत प्रभावित है और स्त्री विमर्श की महत्वपूर्ण कड़ी है।"'चंद्रप्रभा' बेमेल विवाह पर आधारित सामाजिक उपन्यास है, जो "आधुनिक युग के स्त्री विमर्श का प्रथम पाठ कहा जा सकता है।"

'सीमंतनी उपदेश' के प्रत्येक पन्ने से हिंदू स्त्री की गुलामी और पीड़ा की चीख का संकेत मिलता है, जिसका उद्देश्य दूर-दूर तक की गूंजने वाली पुकार है। 'सीमंतनी उपदेश' के ग्रंथ के मन में स्वतंत्रता की पीड़ा और निराशा की चाह कितनी गहरी थी, इस कथन में देखा जा सकता है कि "अगर इस दुनिया में कुछ खुशी है तो निश्चिंतता की है जो अपनी ताई आजादी रखती है। हिंदुस्तानी औरतों को तो आज़ादी किसी हाल में नहीं हो सकती। बाप, भाई, बेटा, आदिवासी सभी हुकूमत रखते हैं।

महादेवी वर्मा कृत ' श्रृंखला की कड़ियां ' स्त्री विमर्श की दृष्टि से स्त्री जागरण का घोषणापत्र है। जिसमें स्त्री की स्वतंत्रता की पहचान और मुक्ति की राह की खोज की चिंता व्यक्त की गई है। महादेवी वर्मा का कहना है कि "भारतीय नारी जिस दिन अपनी संपूर्ण प्राण-प्रवेश से जागती है, उस दिन उसकी गति लाभ किसी के लिए संभव नहीं है, उसके अधिकार के संबंध में यह सत्य है कि भिक्षावृत्ति से न मिले और न मिलेगी क्योंकि स्थिति आदी-प्राप्त उपयुक्त वस्तु भिन्न है।" स्त्री विमर्श के स्वर इन साहित्य का लेखन हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी गद्यकार एवं कवि रघुवीर सहायजी नारी जीवन के वास्तविक चित्र बनाते हैं , उन्होंने अपनी काव्य में स्वतंत्रता के बाद नारी जीवन की अनेक समस्याओं को विषय बनाया है। जिस भारत में स्त्री वैदिक काल में " यत्र नार्यस्तु पूज्यंते तत्र रमन्ते देवता " कहा गया था आज भी अनेक शोषण का शिकार हो रही है। वह है –

" नारी लड़की है[3,4]
प्यार की मारी
तन से क्षुदित है
लपक कर झपक कर
अंत में चित्त है। "

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 2.120 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 2, Issue 2, March 2015 |

प्रस्तुत पंक्ति में कविवर सहाय जी नारी को चुरारी, उसकी नवजात अवस्था का वर्णन है जो अपने अधिकार के लिए लड़कियाँ नहीं है। लेकिन वर्तमान में यह स्थिति बदली हुई नजर आती है। भारत सरकार ने सन् 2001 में महिला आरक्षण वर्ष घोषित किया। अब नारी अपने हरेक अधिकार को लेकर रहेगी। यही युद्ध स्त्री - शास्त्रार्थ या नारी संप्रदाय के रूप में स्थापित है।

भक्ति काल के निर्गुण संत सत्यनारायण ने नारी को मुक्ति मार्ग की बाधा बताया हैI कबीर का अभिमत है कि "नारी की छाया, अन्धा होत भुजंग"। यानि नारी की छाया सुपरहीरो साँप ही अँधा हो जाती है। सुंदरदास के अनुसार, "नारी विष का निशान, विष की बेल है।" यही सबसे विदित होता है कि अनुपातिक नारी के एकमात्र कामिनी रूप को ही देखा जाता है; उनके मातृभाषा रूप एवं पतिपरायण रूप को नहीं। दूसरी और संत डेयरी ने नारी के पूर्वजों एवं पतिपरायण रूप को आदर की दृष्टि से देखा है। तुलसीदास के साथ ही वैली ने नारी को ताड़न का अधिकारी माना कि उसे पशु तुल्य स्वीकारोक्ति कवि माना जाता है, शायद ही कोई ऐसा होगा जिसने डेयरी के प्रति तीन जिज्ञासाओं वाले शब्दों का प्रयोग किया हो। सूफियों के अनुसार नारी प्रेम एवं पूजा की वस्तु है। उसे योग, त्याग, तपस्या और उत्सर्ग ही मिलता है। उनकी प्रेम लौकिक-अलौकिक दोनों ही हैं। सूरदास जी ने अपने काव्य में विभिन्न विद्वानों, उनके सिद्धांतों और सिद्धांतों का सहज एवं यथार्थ चित्रण किया है। सूर ने नारी हृदय का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। सूरसागर के प्रथम खंड में कृष्ण कथा का वर्णन है कि पूर्व नारी को नागिन से अधिक भयंकर कवि बताया गया है और लिखा है कि 'नागिन का विष तो समरूपता है, जब वह काटती है, पर नारी अपनी दृष्टि विशेष से मानव मन को पहचानती है कर विकल्प है। ऐसे समय में जहां नारी को नरक का द्वार, सर्पिणी, अध्यात्म में बाधक, पशुतुल्य जैसे उपमानों से अलंकृत किया गया था। उस समय कृष्णभक्त मीराबाई का पितृसत्तात्मक समाज के विरोधी अपने निजता के धार्मिक जीवन यापन को लेकर बहुत आश्चर्य की बात थी। मीरा की भावना थी, नारीत्व की भावना थी, जो पूर्णत्व चाहती थी। ऐसे काव्यों में प्रेम-विरह है, विलास से निर्विकार नारी का चित्रकार तो ऐसा प्रतीत होता है कि उस नारी की स्वतंत्र एवं क्षमता की अनुभूति का बोध कदापि नहीं हो पाता और न ही उनका समग्र व्यक्तित्व उभर कर सामने आता है।

काल में नारी की नारी विषयक दृष्टि में उसे नागिन और नरक का द्वार कहा गया है तो दूसरी और-अपनी आत्मा को नारी भक्ति रूप में अंकित किया गया है। एक और नारी को मुक्ति मार्ग की बाधा उसकी दृष्टि को बाधित करती है और साथ ही यह भी स्पष्ट हो जाता है कि सामान्य नारी के प्रति उसका दृष्टिकोण उदार नहीं है। संत सत्यकाव्य में भी नारी के सम्बन्ध को बताया गया है। इन व्यंजनों के लिए नारी पुरुष के समान स्वतंत्र न एक मनोरंजन की सामग्री थी। रीतिकाल के बर्तन ने तो नारी को सिर्फ एक दोस्त के रूप में वर्णित किया है। पत्नीत्व की गरिमा के दर्शन तो कहीं भी नहीं मिलते। इसी कारण रीतिकाल के बर्तनों की कविताएँ श्रृंगार रस पर ही आधारित थीं। सेनापति, बिहारी, मतिराम आदि की दृष्टि तो नारी के नयन और उनकी दैहिक सुंदरता पर ही टिकी रही। इन चिकित्सकों के दर्शन में यशोदा की मातृभूमि की गरिमा का भी कोई स्थान नहीं था। मूल रूप से स्पष्ट है कि इन बर्तनों की दृष्टि हर समय दर्शन और विला में ही रह रही है। कविगण अपने आश्रयदाता की मनस्तुष्टि साधना प्रमुख रूप से करते थे। रीतिकाल में तो नीतिकाव्य में भी नारी को कहीं भी आदर नहीं मिला।

पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने स्त्री समाज को हमेशा के लिए अंधकारमय जीवन जीने के लिए मजबूर कर दिया है। लेकिन आज की नारी चेतनशील है जिसे अच्छे-बुरे का ज्ञान है। अब इस व्यवस्था का फ़ेक्चर कर क्लीनएंड माइटिकल लाइफ़ लाइफ़ शुरू हो गया है। नारीवाद को लेकर अपने-अपने समय पर कई विद्वानों ने चिंता व्यक्त की है। तुलसीदास जी ने " ढोल गंवार , शूद्र , पशु , नारी- सकल ताड़ना के अधिकारी " " नारी को प्रताड़ना के पात्र समझाते हैं तो मैथलीशरण गुप्त जी ने " अबला जीवन हाय षष्ठी यही कहानी , आंचल में है दूध और आंखों में पानी " अकेला नारी के पद पर चिंता व्यक्त की गई है। प्रसाद ने " नारी तुम सिर्फ श्रद्धा हो " कहा है तोक्सपियर ने " दुर्बलता लड़की का नाम ही नारी है " आदि नायिका नारी की अनुभूति को बताया है।

अब स्थिति कुछ बदली हुई नजर आती है। क्योंकि साढ़े सातवीं सदी से पहले तक केवल पुरुष लेखक का अधिकार था , महिला[4,5] लेखन को काउच लेखक की खलनायकी उड़ाया गया था। लेकिन अब स्त्री - चर्चा का डंका बज रहा है क्योंकि रोमानियाई दशक तक आते-आते महिला वैज्ञानिक की खुराक सी आ गई। इसके बाद उनकी भी प्रसिद्ध लेखिका सीमन डी बाउर का कथन है कि महिला समाज में पहचान होती है - " स्त्री की स्थिति संबद्धता की है। महिला युगल से एकजुट हो गई है और अगर उसे कुछ स्वतंत्रता हासिल करनी है तो बस इतना ही है कि महिला को अपनी सुविधा के लिए एक साथी की जरूरत है। यह त्रासदी उस व्यक्ति का हिस्सा है , जिसे आधी आबादी कहा जाता है। "

नारी मुक्ति से जुड़े कई प्रश्न , उन पुरातात्विक से जुड़े सामाजिक , पारिवारिक आर्थिक बेबसी और उनसे जुड़ी नारी की मन: स्थिति का चित्रण कई टुकड़ों पर हुआ है। " सातवें दशक और उसके संघर्ष के सबसे ऐतिहासिक इतिहासकारों में से एक महिला का अपना हुआ इतिहास है

इस अध्ययन से ज्ञात होता है कि हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श के रूप में जो लेख आज उपस्थित है वह वेदों में भी कूटपुट प्रयास है। जो महिला की लैपटॉप स्थिति का परिचय देती है। वेद मन्त्रों की दृष्टी के रूप में उपस्थित स्त्री का साक्षात प्रमाण है। इसके मूल स्त्री लेखन की दृष्टि से कई लेखकों का नाम और उनके पाठ्यक्रम का पता चलता है। थेरियाँ, भक्त कवयित्रियाँ हो या आधुनिक काल की कवयित्रियाँ का लेखन, सभी ने स्त्री की पराधीनता, उनकी दुष्टता की ओर ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है। दशकों से पहले स्त्री शास्त्र के जो प्रमाण मिले हैं, वे आज के स्त्री विमर्श की सांकेतिक रचनाएँ हैं, इसे निःसंदेह स्वीकार किया जा सकता है। साथ ही

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 2.120 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 2, Issue 2, March 2015 |

हमें इस बात पर भी ध्यान देना चाहिए कि, जिस प्रकार के समाज की स्त्री और पुरुष दोनों मिलकर बनी हैं, किसी एक के समाज की कल्पना के बिना संभव नहीं है, उसी प्रकार के स्त्री लेखन के साहित्य को पूर्ण साहित्य नहीं कहा जा सकता है मैं

II. विचार-विमर्श

हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श जिसमें नारी जीवन की अनेक समस्याएं देखने को मिलता है। हिन्दी साहित्य में छायावाद काल से स्त्री-विमर्श का जन्म माना जाता है। महादेवी वर्मा की श्रृंखला की कड़िया नारी सशक्तिकरण का सुन्दर उदाहरण है।

प्रेमचंद से लेकर आज तक अनेक पुरूष लेखकों ने स्त्री समस्या को अपना विषय बनाया लेकिन उस रूप् में नहीं लिखा जिस रूप् में स्वयं महिला लेखिकाओं ने लिखी है। अतः स्त्री-विमर्श की शुरूआती गुंज पश्चिम में देखने को मिला। सन् 1960 ई. के आस-पास नारी सशक्तिकरण जोर पकड़ी जिसमें चार नाम चर्चित हैं। उषा प्रियम्वदा, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी एवं शिवानी आदि लेखिकाओं ने नारी मन की अन्तद्र्वन्द्वों एवं आप बीती घटनाओं को उकरेना शुरू किए और आज स्त्री-विमर्श एक ज्वलंत मुद्दा है।

आठवें दशक तक आते-आते यही विषय एक आन्दोलन का रूप ले लिया जो शुरूआती स्त्री-विमर्श से ज्यादा शक्तिशाली सिद्ध हुआ। आज मैत्रेयी पुष्पा तक आते-आते महिला लेखिकाओं की बाढ़ सी आ गयी जो पितृसत्ता समाज को झकझोर दिया। नारी मुक्ति की गुंज अब देह मुक्ति के रूप में परिलक्षित होने लगा।

हिन्दी साहित्य स्त्री समस्या लेखिकाओं
हिन्दी साहित्य में स्त्री - विमर्श की शुरूआत छायावाद काल से माना जाता है। महादेवी वर्मा की कविताओं में वेदना का विभिन्न रूप देखने को मिलता है। उसकी श्रृंखला की कड़िया' स्त्री सशक्तिकरण का सुन्दर उदाहरण है। जिसमें नारी-जागरण एवं [5,6]मुक्ति का सवाल को उठाया गया है। ऐसा साहित्य जिसमें स्त्री जीवन की अनेक समस्याओं का चित्रण हो स्त्री - विमर्श कहलाता है।

प्रेमचन्द से लेकर राजेन्द्र यादव तक अनेक पुरूष लेखकों ने नारी समस्या को उकेरा है। लेकिन उस रूप में नहीं जिस रूप में स्वयं महिला लेखिकाओं ने लेखनी चलायी है। हिन्दी कथा- साहित्य में नारी-मुक्ति को लेकर स्त्री - विमर्श की गूंज 1960 ई. में पश्चिम में हुआ था । जिसमें चार नाम चर्चित है- उषा प्रियम्वदा, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी एवं शिवानी। ये नारी मन के छिपे शक्तियों को पहचाना और नारी की दिशाहीनता, दुविधाग्रस्तता, कुण्ठा आदि का विश्लेषण किया।

हिन्दी पद्य व गद्य में नारी विमर्शः-
समाज के दो पहलू स्त्री-पुरूष एक दूसरे के पूरक है। किसी एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व नहीं है। उसके बाद भी पुरूष समाज ने महिला समाज को अपने बराबर के समानता से वंचित रखा। यही पक्षपात दृष्टि ने शिक्षित नारियों को आंदोलन करने को मजबूर किया जो आज ज्वलंत मुद्दा नारी - विमर्श के रूप में दृष्टिगोचर है।

आदिकाल से ही नारियों की दशा दयनीय एवं सोचनीय थी। स्त्रियों की दशा को देखकर विवेकानंद कहते है - स्त्रियों की अवस्था को सुधारे बिना जगत के कल्याण की कोई सम्भावना नहीं है। पक्षी के लिए एक पंख से उड़ना सम्भव नहीं है।1 विवेकानंद जी महिला समाज की वास्तविक दशा से चिंचित, देश एवं समाज के भलाई महिला समाज के तरक्की के बगैर असंभव बताया है।

सुशीला टाकभौरे के काव्य संग्रह स्वातिबूंद और खारे मोती तथा यह तुम भी जानों काफी चर्चित रहे हैं। इनकी विद्रोहणी कविता में आक्रोश की ध्वनि सुनाई पड़ती है -

''मां-बाप ने पैदा किया था गूंगा
परिवेश ने लंगड़ा बना दिया
चलती रही परिपाटी पर
बैसाखियां चरमराती हैं।
अधिक बोझ से अकुलाकर
विस्कारित मन हुंकारता है
बैसाखियों को तोड़ दूं।''2

उपर्युक्त कविता स्त्री-जीवन की वास्तविकता को प्रदर्शित कर रही है।

स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी गद्यकार एवं कवि रघुवीर सहायजी नारी जीवन की वास्तविक चित्र खिंचा हैं, उन्होंने अपने काव्य में स्वतंत्रता के बाद स्त्री जीवन की अनेक समस्याओं को विषय बनाया है। जिस भारत में स्त्री वैदिक काल में ''यत्र नार्यस्तु पूज्यंते तत्र रमंते देवता'' कहा जाता था आज वही अनेक शोषण का शिकार हो रही है। वह कहता है -

''नारी बेचारी है

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 2.120 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 2, Issue 2, March 2015 |

पुरूष की मारी
तन से क्षुदित है
लपक कर झपक कर
अंत में चित्त है।''3

प्रस्तुत पंक्ति में कविवर सहाय जी नारी को बेचारी कहकर उसकी दयनीय दशा का वर्णन किया है जो अपने अधिकारों के लिए लड़ नहीं पाती। लेकिन वर्तमान में यह स्थिति परिवर्तित नजर आती है। भारत सरकार ने सन् 2001 को महिलाओं के सशक्तिकरण वर्ष के रूप में घोषित किया। अब नारी अपनी हरेक अधिकार को लेकर रहेगी। यही लड़ाई स्त्री - विमर्श या नारी सशक्तिकरण के रूप में परिलक्षित होती है।

स्त्री लेखिकाओं का योगदानः-
हिन्दी कथा साहित्य में नारी विमर्श का जोर आठवें दशक तक आते-आते एक आंदोलन का रूप ले लिया। आठवें दशक के महिला लेखिकाओं में उल्लेखनीय है- ममता कालिया, कृष्णा अग्निहोत्री, चित्रा मुद्गल, मणिक मोहनी, मृदुला गर्ग, मुदुला सिन्हा, मंजुला भगत, मैत्रेयी पुष्पा, मृणाल पाण्डेय, नासिरा शर्मा, दिप्ती खण्डेलवाल, कुसुम अंचल, इंदू जैन, सुनीता जैन, प्रभाखेतान, सुधा अरोड़ा, क्षमा शर्मा, अर्चना वर्मा, नमिता सिंह, अल्का सरावगी, जया जादवानी, मुक्ता रमणिका गुंप्ता आदि ये सभी लेखिकाओं ने नारी मन की गहराईयों, अन्तद्र्वन्द्वों तथा अनेक समस्याओं का अंकन संजीदगी से किया है।[6,7]

स्त्री की दशाओं पर अनेक समाज सुधारकों ने चिन्ता व्यक्त किया और यथा सम्भव दूर करने का प्रयास भी। जिससे नारी की स्थिति में परिवर्तन हुआ। ब्रम्ह समाज, आर्य समाज, थियोसोफिकल सोयायटी, रामकृष्ण मिशन तथा अनेक सरकारी संगठनों ने नारी शिक्षा पर जोर दिया, जिसका सकारात्मक परिणाम आया। वंदना वीथिका के शब्दों में - ''नारियों के लिए सबसे बड़ा अभिशाप उनकी अशिक्षा थी और उनकी परतंत्रता का प्रमुख कारण उनकी आथर्िक स्वतंत्रतता का अभाव था। आज स्थिति परिवर्तित हुई है। आज हर क्षेत्र का द्वार लड़कियों के लिए खुला है। वे हर जगह प्रवेश पाने लगी हैं - जमीं से आसमां तक - पृथ्वी से चांद तक (कल्पना चांवला, सुनिता विलियम) उनकी पहुंच है।''4

आज स्त्री समाज सभी क्षेत्रों में अपनी भागीदारी निभा रही है। राजनीतिक हो या सामाजिक, आर्थिक हो या सांस्कृतिक उसके बाद भी यह लड़ाई क्यों? लेकिन सवाल तो यह है कि वह पुरूष की भांति स्वतंत्रता चाहती है। इसीलिए पितृसत्ता का विरोध कर पारम्परिक बेड़ियों को तोड़ना चाहती है।

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में स्त्रीवादी विचार को पनपने का सुअवसार मिला। भूमण्डलीकरण ने अपने तमाम अच्छाईयों एवं बुराईयों के साथ सभी वर्ग के शिक्षित स्त्रियों को घर से बाहर निकलने का अवसार दिया। परिणामस्वरूप स्त्री अपने वर्जित क्षेत्रों में ठोस दावेदारी की और स्वाललम्बन के दिशा में तीव्र प्रयास भी सामने आए।

स्त्री - विमर्श वस्तुतः स्वाधीनता के बाद की संकल्पना है। स्त्री के प्रति होने वाले शोषण के खिलाफ संघर्ष है। डा॰. संदीप रणभिरकर के शब्दों में - ''स्त्री - विमर्श स्त्री के स्वयं की स्थिति के बारे में सोचने और निर्णय करने का विमर्श है। सदियों से होते आए शोषण और दमन के प्रति स्त्री चेतन ने ही स्त्री- विमर्श को जन्म दिया है।''5

पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने स्त्री समाज को हमेशा अंधकारमय जीवन जीने को मजबूर किया है। लेकिन आज की नारी चेतनशील है जिसे अच्छे-बुरे का ज्ञान है। इसीलिए अब इस व्यवस्था का बहिष्कार कर स्वच्छंदात्मक जीवन जीने को आतुर दिखाई पड़ती है। नारी अस्तित्व को लेकर अपने-अपने समय पर कई विद्वानों ने चिन्ता व्यक्त किया है। तुलसीदास जी ने ''ढ़ोल गवार, शूद्र, पशु, नारी- सकल ताड़ना के अधिकारी'' कहकर नारी को प्रताड़ना के पात्र समझा है तो मैथलीशरण गुप्त जी ने ''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आंचल में है दूध और आंखों में पानी'' कहकर नारी के स्थिति पर चिन्ता व्यक्त किया है। प्रसाद ने ''नारी तुम केवल श्रद्धा हो'' कहा है तो शेक्सपियर ने ''दुर्बलता तुम्हारा नाम ही नारी है'' आदि कहकर नारी अस्तित्व को संकीर्ण बताया है।

अब स्थिति कुछ बदली हुई नजर आती है। क्योंकि छठे शताब्दी के पहले तक सिर्फ पुरूष लेखकों का अधिकार था, महिला लेखन को काऊच लेखक कहकर हंसी उड़ाया जाता था। परन्तु अब स्त्री - विमर्श का डंका इसलिए बज रहा है क्योंकि आठवें दशक तक आते-आते महिला लेखिकाओं की बाढ़ सी आ गयी। उसके बाद भी प्रसिद्ध लेखिका सीमोन द बोउआर के उक्त कथन महिला समाज में परिलक्षित होती है - ''स्त्री की स्थिति अधीनता की है। स्त्री सदियों से ठगी गई है और यदि उसने कुछ स्वतंत्रता हासिल की है तो बस उतनी ही जितनी पुरूष ने अपनी सुविधा के लिए उसे देनी चाही। यह त्रासदी उस आधे भाग की है, जिसे आधी आबादी कहा जाता है।''6

नारी मुक्ति से जुड़े अनेक प्रश्न, उन प्रश्नों से जुड़ी सामाजिक, पारिवारिक एवं आर्थिक बेबसी और उससे उत्पन्न स्त्री की मनः स्थिति का चित्रण अनेक स्तरों पर हुआ है। ''साठ के दशक और उसके संघर्ष का अधिकांश इतिहास जागरूक होती हुई स्त्री का अपना रचा

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 2.120 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 2, Issue 2, March 2015 |

हुआ इतिहास है। नगरों एवं महानगरों में शिक्षित एवं नवचेतना युक्त स्त्रियों का एक ऐसा वर्ग तैयार हो गया था जो समाज के विविध क्षेत्र में अपनी कार्य क्षमता प्रमाणित करने के लिए उत्सुक था।''7

हिन्दी कथा लेखिकाओं ने अपने-अपने लेखन में नारी मन की अनेक समस्याओं को विषय बनाया है। अमृता प्रीतम के रसीदी टिकट, कृष्णा सोबती- मित्रों मरजानी, मन्नू भण्डारी-आपका बंटी, चित्रा मुद्गल -आबां एवं एक जमीन अपनी, ममता कालिया- बेघर, मृदुला गर्ग - कठ गुलाब, मैत्रेयी पुष्पा - चाक एवं अल्मा कबूतरी, प्रभा खेतान के छिन्नमस्ता, पद्मा सचदेव के अब न बनेगी देहरी, राजीसेठ का तत्सम, मेहरून्निसा परवेज का अकेला पलाश, शशि प्रभा शास्त्री की सीढ़ियां, कुसुम अंचल के अपनी-अपनी यात्रा, शैलेश मटियानी की बावन नदियों का संगम, उषा प्रियम्वदा के पचपन खम्बे, लाल दिवार, दीप्ति खण्डेलवाल के प्रतिध्वनियां आदि में नारी संघर्ष को देखा जा सकता है। डॉ ज्योति किरण के शब्दों में - ''इस समाज में जब स्त्रियां अपनी समझ और काबलियत जाहिर करती हैं तब वह कुलच्छनी मानी जाती हैं, जब वह खुद विवेक से काम करती है तब मर्यादाहीन समझी जाती है। अपनी इच्छाओं, अरमानों के लिए[7,8] जब वह आत्मविश्वास के साथ लड़ती हैं और गैर समझौतावादी बन जाती है, तब परिवार और समाज के लिए वह चुनौती बन जाती है।''8

महिला लेखिकाओं की लड़ाई डॉ जयोति किरण की उपर्युक्त गद्यांश में देखी जा सकती है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नारी आदिकाल से ही पीड़ित एवं शोषित रही है पुरूष प्रधान समाज मान मर्यादा के आड़ में सदा उसे दबाकर रखना चाहा। कभी घर का इज्जत कहकर तो कभी देवी कहकर चार दीवारों के अन्दर कैद ही रखा। इन्हीं परम्परागत पित्सत्तात्मक बेड़ियों को लांघने की लड़ाई है स्त्री - विमर्श।

III. परिणाम

वेद नारी को अत्यंत महत्वपूर्ण, गरिमामय, उच्च स्थान प्रदान करते हैं| वेदों में

स्त्रियों की शिक्षा- दीक्षा, शील, गुण, कर्तव्य, अधिकार और सामाजिक भूमिका का जो सुन्दर वर्णन पाया जाता है, वैसा संसार के अन्य किसी धर्मग्रंथ में नहीं है| वेद उन्हें घर की सम्राज्ञी कहते हैं और देश की शासक, पृथ्वी की सम्राज्ञी तक बनने का अधिकार देते हैं|

वेदों में स्त्री यज्ञीय है अर्थात् यज्ञ समान पूजनीय| वेदों में नारी को ज्ञान देने वाली, सुख – समृद्धि लाने वाली, विशेष तेज वाली, देवी, विदुषी, सरस्वती, इन्द्राणी, उषा- जो सबको जगाती है इत्यादि अनेक आदर सूचक नाम दिए गए हैं|

वेदों में स्त्रियों पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं है – उसे सदा विजयिनी कहा गया है और उन के हर काम में सहयोग और प्रोत्साहन की बात कही गई है| वैदिक काल में नारी अध्यन- अध्यापन से लेकर रणक्षेत्र में भी जाती थी| जैसे कैकयी महाराज दशरथ के साथ युद्ध में गई थी| कन्या को अपना पति स्वयं चुनने का अधिकार देकर वेद पुरुष से एक कदम आगे ही रखते हैं|

अनेक ऋषिकाएं वेद मंत्रों की द्रष्टा हैं – अपाला, घोषा, सरस्वती, सर्पराज्ञी, सूर्या, सावित्री, अदिति- दाक्षायनी, लोपामुद्रा, विश्ववारा, आत्रेयी आदि |

तथापि, जिन्होनें वेदों के दर्शन भी नहीं किए, ऐसे कुछ रीढ़ की हड्डी विहीन बुद्धिवादियों ने इस देश की सभ्यता, संस्कृति को नष्ट – भ्रष्ट करने का जो अभियान चला रखा है – उसके तहत वेदों में नारी की अवमानना का ढ़ोल पीटते रहते हैं |

आइए, वेदों में नारी के स्वरुप की झलक इन मंत्रों में देखें -

यजुर्वेद २०.९
[8,9]
स्त्री और पुरुष दोनों को शासक चुने जाने का समान अधिकार है |

यजुर्वेद १७.४५

स्त्रियों की भी सेना हो | स्त्रियों को युद्ध में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें |

यजुर्वेद १०.२६

शासकों की स्त्रियां अन्यों को राजनीति की शिक्षा दें | जैसे राजा, लोगों का न्याय करते हैं वैसे ही रानी भी न्याय करने वाली हों |

अथर्ववेद ११.५.१८

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 2.120 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 2, Issue 2, March 2015 |

ब्रह्मचर्य सूक्त के इस मंत्र में कन्याओं के लिए भी ब्रह्मचर्य और विद्या ग्रहण करने के बाद ही विवाह करने के लिए कहा गया है | यह सूक्त लड़कों के समान ही कन्याओं की शिक्षा को भी विशेष महत्त्व देता है |

कन्याएं ब्रह्मचर्य के सेवन से पूर्ण विदुषी और युवती होकर ही विवाह करें |

अथर्ववेद १४.१.६

माता- पिता अपनी कन्या को पति के घर जाते समय बुद्धीमत्ता और विद्याबल का उपहार दें | वे उसे ज्ञान का दहेज़ दें |

जब कन्याएं बाहरी उपकरणों को छोड़ कर, भीतरी विद्या बल से चैतन्य स्वभाव और पदार्थों को दिव्य दृष्टि से देखने वाली और आकाश और भूमि से सुवर्ण आदि प्राप्त करने – कराने वाली हो तब सुयोग्य पति से विवाह करे |

अथर्ववेद १४.१.२०

हे पत्नी ! हमें ज्ञान का उपदेश कर |

वधू अपनी विद्वत्ता और शुभ गुणों से पति के घर में सब को प्रसन्न कर दे |

अथर्ववेद ७.४६.३

पति को संपत्ति कमाने के तरीके बता |

संतानों को पालने वाली, निश्चित ज्ञान वाली, सहत्रों स्तुति वाली और चारों ओर प्रभाव डालने वाली स्त्री, तुम ऐश्वर्य पाती हो | हे सुयोग्य पति की पत्नी, अपने पति को संपत्ति के लिए आगे बढ़ाओ |

अथर्ववेद ७.४७.१

हे स्त्री ! तुम सभी कर्मों को जानती हो |

हे स्त्री ! तुम हमें ऐश्वर्य और समृद्धि दो |

अथर्ववेद ७.४७.२

तुम सब कुछ जानने वाली हमें धन – धान्य से समर्थ कर दो |

हे स्त्री ! तुम हमारे धन और समृद्धि को बढ़ाओ |

अथर्ववेद ७.४८.२

तुम हमें बुद्धि से धन दो |

विदुषी, सम्माननीय, विचारशील, प्रसन्नचित्त पत्नी संपत्ति की रक्षा और वृद्धि करती है और घर में सुख़ लाती है |

अथर्ववेद १४.१.६४

हे स्त्री ! तुम हमारे घर की प्रत्येक दिशा में ब्रह्म अर्थात् वैदिक ज्ञान का प्रयोग करो |

हे वधू ! विद्वानों के घर में पहुंच कर कल्याणकारिणी और सुखदायिनी होकर तुम विराजमान हो |

अथर्ववेद २.३६.५

हे वधू ! तुम ऐश्वर्य की नौका पर चढ़ो और अपने पति को जो कि तुमने स्वयं पसंद किया है, संसार – सागर के पार पहुंचा दो |

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 2.120 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 2, Issue 2, March 2015 |

हे वधू ! ऐश्वर्य कि अटूट नाव पर चढ़ और अपने पति को सफ़लता के तट पर ले चल |

अथर्ववेद १.१४.३
[9,10]
हे वर ! यह वधू तुम्हारे कुल की रक्षा करने वाली है |

हे वर ! यह कन्या तुम्हारे कुल की रक्षा करने वाली है | यह बहुत काल तक तुम्हारे घर में निवास करे और बुद्धिमत्ता के बीज बोये |

अथर्ववेद २.३६.३

यह वधू पति के घर जा कर रानी बने और वहां प्रकाशित हो |

अथर्ववेद ११.१.१७

ये स्त्रियां शुद्ध, पवित्र और यज्ञीय (यज्ञ समान पूजनीय) हैं, ये प्रजा, पशु और अन्न देतीं हैं |

यह स्त्रियां शुद्ध स्वभाव वाली, पवित्र आचरण वाली, पूजनीय, सेवा योग्य, शुभ चरित्र वाली और विद्वत्तापूर्ण हैं | यह समाज को प्रजा, पशु और सुख़ पहुँचाती हैं |

अथर्ववेद १२.१.२५

हे मातृभूमि ! कन्याओं में जो तेज होता है, वह हमें दो |

स्त्रियों में जो सेवनीय ऐश्वर्य और कांति है, हे भूमि ! उस के साथ हमें भी मिला |

अथर्ववेद १२.२.३१

स्त्रियां कभी दुख से रोयें नहीं, इन्हें निरोग रखा जाए और रत्न, आभूषण इत्यादि पहनने को दिए जाएं |

अथर्ववेद १४.१.२०

हे वधू ! तुम पति के घर में जा कर गृहपत्नी और सब को वश में रखने वाली बनों |

अथर्ववेद १४.१.५०

हे पत्नी ! अपने सौभाग्य के लिए मैं तेरा हाथ पकड़ता हूं |

अथर्ववेद १४.२ .२६

हे वधू ! तुम कल्याण करने वाली हो और घरों को उद्देश्य तक पहुंचाने वाली हो |

अथर्ववेद १४.२.७१

हे पत्नी ! मैं ज्ञानवान हूं तू भी ज्ञानवती है, मैं सामवेद हूं तो तू ऋग्वेद है |

अथर्ववेद १४.२.७४

यह वधू विराट अर्थात् चमकने वाली है, इस ने सब को जीत लिया है |

यह वधू बड़े ऐश्वर्य वाली और पुरुषार्थिनी हो |

अथर्ववेद ७.३८.४ और १२.३.५२

सभा और समिति में जा कर स्त्रियां भाग लें और अपने विचार प्रकट करें |

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 2.120 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 2, Issue 2, March 2015 |

ऋग्वेद १०.८५.७

माता- पिता अपनी कन्या को पति के घर जाते समय बुद्धिमत्ता और विद्याबल उपहार में दें | माता- पिता को चाहिए कि वे अपनी कन्या को दहेज़ भी दें तो वह ज्ञान का दहेज़ हो |

ऋग्वेद ३.३१.१

पुत्रों की ही भांति पुत्री भी अपने पिता की संपत्ति में समान रूप से उत्तराधिकारी है |

ऋग्वेद १० .१ .५९

एक गृहपत्नी प्रात : काल उठते ही अपने उद् गार कहती है -

" यह सूर्य उदय हुआ है, इस के साथ ही मेरा सौभाग्य भी ऊँचा चढ़ निकला है | मैं अपने घर और समाज की ध्वजा हूं , उस की मस्तक हूं | मैं भारी व्यख्यात्री हूं | मेरे पुत्र शत्रु -विजयी हैं | मेरी पुत्री संसार में चमकती है | मैं स्वयं दुश्मनों को जीतने वाली हूं | मेरे पति का असीम यश है | मैंने वह त्याग किया है जिससे इन्द्र (सम्राट) विजय पता है | मुझेभी विजय मिली है | मैंने अपने शत्रु नि:शेष कर दिए हैं | "

वह सूर्य ऊपर आ गया है और मेरा सौभाग्य भी ऊँचा हो गया है | मैं जानती हूं , अपने प्रतिस्पर्धियों को जीतकर मैंने पति के प्रेम को फ़िर से पा लिया है |

मैं प्रतीक हूं , मैं शिर हूं , मैं सबसे प्रमुख हूं और अब मैं कहती हूं कि मेरी इच्छा के अनुसार ही मेरा पति आचरण करे | प्रतिस्पर्धी मेरा कोई नहीं है |

मेरे पुत्र मेरे शत्रुओं को नष्ट करने वाले हैं , मेरी पुत्री रानी है , मैं विजयशील हूं | मेरे और मेरे पति के प्रेम की व्यापक प्रसिद्धि है |

ओ प्रबुद्ध ! मैंने उस अर्ध्य को अर्पण किया है , जो सबसे अधिक उदाहरणीय है और इस तरह मैं सबसे अधिक प्रसिद्ध और सामर्थ्यवान हो गई हूं | मैंने स्वयं को अपने प्रतिस्पर्धियों से मुक्त कर लिया है |

मैं प्रतिस्पर्धियों से मुक्त हो कर, अब प्रतिस्पर्धियों की विध्वंसक हूं और विजेता हूं | मैंने दूसरों का वैभव ऐसे हर लिया है जैसे की वह न टिक पाने वाले कमजोर बांध हों | मैंने मेरे प्रतिस्पर्धियों पर विजय प्राप्त कर ली है | जिससे मैं इस नायक और उस की प्रजा पर यथेष्ट शासन चला सकती हूं |

इस मंत्र की ऋषिका और देवता दोनों हो शची हैं | शची इन्द्राणी है, शची स्वयं में राज्य की सम्राज्ञी है (जैसे कि कोई महिला प्रधानमंत्री या राष्ट्राध्यक्ष हो) | उस के पुत्र – पुत्री भी राज्य के लिए समर्पित हैं |

ऋग्वेद १.१६४.४१

ऐसे निर्मल मन वाली स्त्री जिसका मन एक पारदर्शी स्फटिक जैसे परिशुद्ध जल की तरह हो वह एक वेद, दो वेद या चार वेद , आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्ववेद , अर्थवेद इत्यादि के साथ ही छ : वेदांगों – शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छंद : को प्राप्त करे और इस वैविध्यपूर्ण ज्ञान को अन्यों को भी दे |

हे स्त्री पुरुषों ! जो एक वेद का अभ्यास करने वाली वा दो वेद जिसने अभ्यास किए वा चार वेदों की पढ़ने वाली वा चार वेद और चार उपवेदों की शिक्षा से युक्त वा चार वेद, चार उपवेद और व्याकरण आदि शिक्षा युक्त, अतिशय कर के विद्याओं में प्रसिद्ध होती और असंख्यात अक्षरों वाली होती हुई सब से उत्तम, आकाश के समान व्याप्त निश्चल परमात्मा के निमित्त प्रयत्न करती है और गौ स्वर्ण युक्त विदुषी स्त्रियों को शब्द कराती अर्थात् जल के समान निर्मल वचनों को छांटती अर्थात् अविद्यादी दोषों को अलग करती हुई वह संसार के लिए अत्यंत सुख करने वाली होती है |

ऋग्वेद १०.८५.४६

IV. निष्कर्ष

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 2.120 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 2, Issue 2, March 2015 |

स्त्री को परिवार और पत्नी की महत्वपूर्ण भूमिका में चित्रित किया गया है | इसी तरह, वेद स्त्री की सामाजिक, प्रशासकीय और राष्ट्र की सम्राज्ञी के रूप का वर्णन भी करते हैं |ऋग्वेद के कई सूक्त उषा का देवता के रूप में वर्णन करते हैं और इस उषा को एक आदर्श स्त्री के रूप में माना गया है | कृपया पं श्रीपाद दामोदर सातवलेकर द्वारा लिखित " उषा देवता ", ऋग्वेद का सुबोध भाष्य देखें |[10]

संदर्भ

1. सुमनराजे, 'हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास', ज्ञानपीठ प्रकाशन दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2014, पृष्ठ सं0 69।
2. वही, पृष्ठ सं091 ।
3. कुमार विमलकीर्ति, 'थेरीगाथा', सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2003, पृष्ठ सं0 21
4. नीरजमाधव, 'हिन्दी साहित्य का ओझल नारी इतिहास' (1857-1947), (नंदी पाठ), प्राचीन पुस्तकें नई दिल्ली, 2014, पृष्ठ सं0 25।
5. वही, पृष्ठ सं055 ।
6. डॉ. धर्मवीर, 'सीमंतनी उपदेश', शेष प्रकाशन, पृष्ठ सं075
7. नीरजमाधव, 'हिन्दी साहित्य का ओझल नारी इतिहास', (1857-1947), (नंदी पाठ), महाकाव्य पुस्तकें नई दिल्ली, 2014, पृष्ठ सं0 79।
8. महादेवीवर्मा, 'श्रृंखला की कड़ियाँ', लोकभारती प्रकाशन गांधी मार्ग इलाहाबाद, तीसरा प्रकाशन, 2014, पृष्ठ सं0 9।
9. स्त्री मुक्ति का संदेह प्रभा ान पृष्ठ क्रमांक 103।
10. हंस पत्रिका प्रेरणा वर्मा की खोज में पुनर यात्रा एक कथा मई 2007 पृष्ठ संख्या 81।